International Journal of Research - GRANTHAALAYAH
February 2026 14(2SCE)
समकालीन कला, साहित्य, संगीत एवं नृत्य का विज्ञान एवं समाज विज्ञान से अंतर्संबंध
www.granthaalayah.com

Original Article

NEGLECT, LACK AND COMMUNICATION BARRIERS IN TRIBAL ART – NEW QUESTIONS FOR UNSUNG ARTISTS

जनजातीय कला में उपेक्षा, अभाव एवं संचार-बांधा की दृष्टि से गुमनाम कलाकार-नए प्रश्न

Dr. Sandeep Kumar Meghwal [1*]
[1] Assistant Professor, Department of Visual Arts, Allahabad University, Prayagraj (U.P.), India

ABSTRACT

English: This paper attempts to introduce unknown tribal artists, away from the glitz and glamour of contemporary modern art. It specifically attempts to highlight new questions arising among artists from tribal backgrounds. In art history, this segment has generally remained obscured, alienated from the mainstream due to neglect, lack of communication, and challenges of communication barriers. This research paper primarily interviews Phula Pargi, a Bhil tribal artist from the Udaipur region of Rajasthan, to reveal his true identity. Furthermore, it introduces the current situation of Bhil, Gond, and Warli tribal artists. Contemporary capitalism, marketism, globalization, bureaucracy, and opportunism have led to the emergence of many new questions, and this paper attempts to highlight these very questions.

Hindi: समकालीन आधुनिक कला की चमक-धमक से दूर गुमनाम आदिवासी कलाकारों से परिचय करने का प्रयास किया हैं. इसमे खासतौर पर आदिवासी पृष्ठभूमि के कलाकारों में उत्पन्न नए प्रश्नों को रेखांकित करने का प्रयास किया हैं। कला इतिहास में यह तबका आमतौर पर उपेक्षा, आभाव एवं संचार बांधा की चुनौतियों से मुख्य धारा से विचलित होकर गुमनाम रहा हैं. यह शोध आलेख5 मुख्यत राजस्थान उदयपुर क्षेत्र के भील आदिवासी कलाकार फुला पारगी से साक्षात्कार करके उनकी वास्तविकता से पर्दार्पण करता हैं. इसके आलावा भील, गोंड एवं वरली आदिवासी कला के कलाकारों की वर्तमान वस्तुस्थिति से परिचय करता हैं. समकालीन पूंजीवाद, बाजारवाद, वैश्वीकरण, अफसरशाही, अवसरवाद के परिणामस्वरूप कई नए प्रश्न उजागर होते हैं उन्ही को रेखांकित करने का प्रयास किया हैं।

Keywords: Tribal Art Anonymous Artist, Phula Pargi, Tribal Art, Contemporary Art, Sanchar-Bandha, जनजातीय कला गुमनाम कलाकार, फुला पारगी, आदिवासी कला, समकालीन कला, संचार-बांधा

प्रस्तावना

फूला जी मीणा से अर्से बाद मिला तो बहुत सुकून मिला। राजस्थान में उदयपुर झाडॉल रोड पर अलसीगढ़ झील की ओर रास्ते में एक घर देखा उसकी दीवार पर कुछ जाने-पहचाने चित्र दिखाई दिए। में और साथी कमल अलसीगढ़ झील के सुन्दर नजारे देखने जा रहे थे. तभी बीच रास्ते में छोटी-ऊंदरी भील जनजाति बहुल गांव

*Corresponding Author:
Email address: Dr. Sandeep Kumar Meghwal (sandeepart01@gmail.com)

Received: 21 December 2025; **Accepted:** 19 January 2026; **Published** 28 February 2026
DOI: 10.29121/granthaalayah.v14.i2SCE.2026.6734
Page Number: 165-170
Journal Title: International Journal of Research -GRANTHAALAYAH
Journal Abbreviation: Int. J. Res. Granthaalayah
Online ISSN: 2350-0530, **Print ISSN:** 2394-3629
Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India
Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.
Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.
Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.
Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.

Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

में हाईवे की सीध में बाई ओर कच्चा घर दिखाई दिया. दूर से देखने पर लगा कि कुछ जाने -पहचाने चित्र बने हुए दिखे. कुछ साल पहले पीएचडी कर रहा था तब इस गांव में आया था। तभी मेरी मुलाकात फूला भील नाम के आदिवासी कलाकार से हुई थी। एक लंबा साक्षात्कार भी किया था. तब यहां से कोई मेगा हाईवे नहीं गुजरता था. नगर की चकाचैंध से सुदूर अरावली की गोद में बसे इस गांव मे हम एक तंग रोड से आए थे। अब विकास फूला के खेत को दो फाड़ करके बीचोबीच से निकल रहा है. रोड के लिए पहाडियों की कटाई करके पहाड़ी के स्क्रेप से खेत को पाट दिया है।

चित्र 1

चित्र 1 (भित्ति चित्र), मई 2015

भित्तिचित्र को देखकर हम गाड़ी धीरे करके झोपड़ी की ओर बढे तभी फूला जी दिखाई दिए तो संतोष हुआ कि सही जगह आया हूं. पीएचडी के साक्षात्कार के बाद फूला जी 2018 में भी मिले थे। 80 पर उम्र के प्रभाव से प्रथम दृष्टया तो फुलाजी मुजे पहचान नहीं पाए. जब साक्षात्कार करने गया तो उनसे वादा करके आया था कि किसी न किसी कला आयोजन में आपको आमंत्रित करेंगे। वादे अनुसार 2018 में ‘फोकलोर’ नामक कला शिविर उदयपुर में प्रो. मदन सिंह राठौर के निर्देशन में हुआ तो इस आयोजन में फूला जी को देश के नामचीन कलाकारों के बीच सहभागिता का अवसर दिया। फोकलोर आदिवासी एवं समकालीन कला के बीच एक कला संवाद करने का प्रयोग था। मेने भी उस पुरानी बात को कुरेद कर पूछा तो फूला जी को कला आयोजन के बारे में सबकुछ याद आया। फिर क्या कला शिविर के अनुभव को बतियाते लगे। दरअसल फूला को पहली बार किसी बहुत बड़े कलामंच पर सृजन करने का अवसर मिला जिसमे देश-विदेश के नामचीन समकालीन कलाकारों के साथ काम करने का अवसर मिला। लेकिन फुला के लिए तो उससे भी महत्वपूर्ण था कि उसमे मिलने वाला मानदेय जो 25 हजार था। एक देशज गरीब आदिवासी कलाकार के लिए बहुत बड़ी रकम थी। हालांकि स्थानीय सरकारी संस्थाएं पश्चिम क्षेत्र साँस्कृतिक केंद्र एवं माािक्य लाल वर्मा जनजातीय शोध एवं प्रशिक्षा केंद्र, उदयपुर यदाकदा कला आयोजन में बुलाती रही है। इंदिरा गांधी कला केंद्र, नई दिल्ली, भारत भवन भोपाल इत्यादि. लेकिन मानदेय के मामले मे खुश नहीं दिखाई दिए। फुलाजी के लिए सम्मान के प्रत्र से ज्यादा महत्वपूा उसमे मिलने वाला मानदेय हैं।

शोध में पाया कि फुला के प्राकृतिक परिवेश के सृजन को देखकर शुद्ध रूप से आत्मिक अनुभूति का अहसास दिखाई दिया। क्यूंकि कला आयोजन का सृजन अलग मायनों को लिए सृजित होता हैं। “लोयोनहार्ड एडम ने आदिवासी कला के सम्बन्ध में लिखा है “कला को पूा रूप से समझने के लिए हमें उसकी पृष्ठभूमि समझनी चाहिए।” आदिवासियों की कला के लिए तो यह बात बहुत ही सच है क्यूंकि उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि बिलकुल ही भिन्न है अफ्रीका में बनी हुई किसी पूर्वज अथवा देवता की प्रतिमा को जो मंदिर वगैरह में रखने के लिए बनाई गई हो, यदि हम उसके स्थान से हटाकर शीशे की अलमारी में बंद करके भारत या यूरोप में चाहे जहाँ रखे, वह उतनी प्रभावोत्पादक नहीं रह जाएगी” Elwin (2016) चूँकि फुलाजी शुद्ध रूप से आदिवासी कलाकार हैं और अपनी आदिवासियत से ही जीवन यापन कर रहे हैं. उनको नहीं पता कि आधुनिक, समकालीन कला, कला दीर्घा, कला बाजार, कला समीक्षा, नीलामी घर की दुनिया क्या है? थोडा-थोडा जब से कला शिविर, कर्शालाओं में जाने लगे तब पता चला कि यह जो में कला का काम करता हूँ, उसकी बहुत कीमत मिल सकती है. लेकिन फिर से यही प्रश्न की कोन? कैसे लेगा? कोई क्रमबद्ध मार्गदर्शन एवं सहयोग के लिए नहीं हैं। जिम्मेदार सरकारी सस्थाओं की भूमिका सुनिश्चित करनी चाहिए। आदिवासी कला एवं कलाकारों के कल्याा के लिए अनगिनत आयोजन होते रहे हैं। फिर यह यहाँ किन लोगों की दखल हैं? आज आदिवासी कला विषयवस्तु को सृजन आधार बनाकर कई समकालीन कलाकारों ने ख्याति प्राप्त की हैं। लेकिन फुला की स्थिति वही आदिम दीनहीन हैं। आदिवासी जीवन की झांकी बनाने वाले ख्यात कलाकार गोवर्धन लाल जोशी (बाबा) का देश दुनिया में बड़ा नाम हैं। जिन आदिवासियों के जीवन शैली से प्रभावित होकेर उनको केनवास पर उतारने वाले ख्याति प्राप्त कहलाए लेकिन फुला जैसे आदिवासी कला एवं कलाकार का उचित सम्मान नहीं मिल पाया? गोवर्धन बाबा आधुनिक एवं आदिम कला पर गहन परिशीलन किया. आदिम कला विषयवस्तु के समर्थन में उनका मत था कि “जिस प्रकार समयांतर से चित्रांकन के माध्यमो में परिवर्तन हुआ हैं उसी प्रकार उसकी विषयवस्तु भी बदलेगी और पश्चिम की नकल कर रहे हैं, वे अपने अभीष्ट तक नहीं पहुँच पाएंगे और समय के गर्भ में उनकी कृतियाँ समां जाएगी” Joshi (n.d.)

फुला के चित्र पौराकि मौखिक आदिम कहानियों को दृश्य रूप दिया हैं। फुला की विषयवस्तु उसका आदिवासियत और उसकी पुरखा कहानियां हैं। यही उसके चित्र की मुल विषयवस्तु बनी हैं। चित्रा में खेती करते हुए, सांप और नेवले की लड़ाई, पनिहारी, बडले की रक्षा करते भुत बाबा, देवी अम्बाव, कान-गुजरी की कहानी, गवरी के आख्यान, राई-बुडिया, नाहर(चिता), सियांर, बकरी चराते हुए, भराडी देवी, दशा माता, गोशजी, लकड़ी लाते हुए, फोटो खिंचवाती बाला, हाथी, हल जोतते हुए, नाग देवता, नाहर से जंगली जानवरों के बिच डरकर पेड़ पर चढ़ना, पक्षी जुंड, भेंसे का शिकार इत्यादि इनके चित्र दिखाई दिए। लोककला एवं आदिवासी कला में स्पष्ट अंतर दिखाई देता हैं। ‘लोककला अपने मुलस्रोत आदिम कला से विकसित तथा परम्परागत शास्त्रीय कला से प्रभावित किन्तु उसके सामने अनगढ़ प्रतीत होती हैं. आदिम कला स्वयंस्फूर्त व सर्जनशील प्रतीत होती हैं। आदिमकला के मुक्तहस्त रेखांकन व मौलिक रचना के सामने लोककला की रेखा तीखी व रचनापद्दति पूर्वनियोजित लगती है। एक ही स्थान पर बनाई गई आदिम कला की मानवों व जानवरों की आकृतियों में भिन्नता दिखायी देती है Joshi (n.d.) इसी प्रकार की विषयवस्तु

को जन्म फुला भी देते हैं। "भारत के आदिवासियों की कला का असली महत्व उपयोगिता की दृष्टि से हैं, इसलिए हम उसे उपयोगिता अथवा सामाजिक उपादेयता से अलग करके कभी भी नहीं समझ सकते. आदिवासियों में कला, कला के लिए नही होती। इनके लिए कला धार्मिक अथवा जादू-टोने के उद्देश्य की पूर्ति करती है और इसका सामाजिक महत्व होता है। इनकी कला का लक्ष्य केवल मात्र सौन्दर्य अथवा अलंकरा नही होता Pankaj (2016) फुला की कला में भी भुत- प्रेत, देवी-देवता, टोना टोटका की विषय वस्तु प्रमुखता से दिखाई पड़ती हैं। इसमें अदृश्य शक्तियां प्रकृति की रक्षा करती हुई दिखाई देती हैं। धीरे- धीरे फुला के चित्र बाजार, अभावग्रस्त जीवन, आर्थिक तंगी से नए मुहावरे गढ़ती जा रही हैं। इनके चित्र और कलात्मक जीवन चुनौतियों को कुछ बिन्दुओ केद्वारा समझा जा सकता हैं।

चित्र 2

चित्र 2 (साक्षात्कार-फुला पारगी), मई 2015

संचार बांधा

फुला अशिक्षित होकर पर कला दृष्टि से परम्परा से दीक्षित हैं। 'मेवाड़ क्षेत्र की लघुचित्र परम्परा की बात करे तो गोर्धन लाल जोशी ने ख्यातिनाम परम्परावादी कलाकार घांसीराम से दीक्षा ली। घासीराम के पास कला का कोई व्यवस्थिक कोर्स नहीं होता था। कुछ मान्यताएँ थी जो अपने विद्यार्थियों को सिखाते थे जैसे जोशी को सिखाया की हाथी, हाथ, घोडा बाकि सब थोडा- थोडा यानि इन चित्रों को बनाना सिख गए तो बाकि सब आसान हैं।" Elwin (2016) फुला भी कुछ इस तरह अपने दादा और पिता के द्वारा आदिवासी कला को आत्मसात किया हैं। फुला अपनी माँतृ भाषा भीली में संवाद करते हैं। कला को आमजन को समझाने के लिए अनुवादक की आवश्यकता का मुख्य बेरियर हैं। अपनी कला को हिंदी या अंग्रेजी में समजा नहीं सकते। कला की दुनिया में अंग्रजी एक सहज माध्यम माना जाता हैं क्यूंकि यह वैश्विक बाजार की संवाद भाषा हैं। फुला का बेटा एवं बेटी भी अनपढ़ है जिससे इनके कला को प्रदर्शित करने में सक्षम नहीं है। सामान्य किपेड दूरभाष यंत्र चलाना नहीं आता और उसमे भी न्यूनतम वैधता मूल्य नहीं चुकाने पर बंद मिलता हैं। संपर्क साधना मुश्किल होता हैं. शोध से जाना कि एक सुदूर आदिवासी कलाकार के लिए संचार बांधा का मुख्य प्रश्न दिखाई देता हैं। आर्थिक अभाव- इनका कहना हे कि घर में आर्थिक तंगी चलती है तो पुराने काम की बिक्री हो तो कुछ नए चित्र सृजित करू। यह कहते हुए जरूरत के अनुसार काम करते हैं। कला सामग्री लाने में भी खर्च होता हैं। यहाँ कला सर्जन के बिच आर्थिक पक्ष एक यक्ष प्रश्न हैं। आधुनिक कला में कई सुप्रसिद्ध कलाकार इसी बेरियर से गुजरते आए हैं। फूलाजी एक मानसूनी खेती पर निर्भर बेहद गरीब परिवार से आते है। लोकलोर कला शिविर में 25 हजार रुपये मानदेय मिला तो बार-बार धन्यवाद कर याद करते हैं. अब वैसा कोई कला शिविर नही मिलता हैं। मुझे एक आदिवासी कलाकार के तौर पर फूला की कई कलाकृतियाँ सरकारी वेबसाइट पर तेर रही हैं। शोधार्थी सहज सुलभ वेबसाइट से इनके काम और नाम को उदयपुर क्षेत्र की आदिवासी कला के रूप में इस्तेमाल करते रहे हैं।

चित्र 3

चित्र 3 (फुला पारगी चित्र सृजन करते हुए)

फूला से मिलकर बात करने पर वास्तविकता से कई पर्दे उठते हैं। फुला को सरकारी संस्थाओ ने एक आदिवासी कलाकार के तौर पर आभासी नमूने के तौर पर बना रखा हैं। सर्च इंजन में भील पेंटिग डालते ही फुला जी के चित्र दिखाई पड़ते है। सरकारी आभासी दस्तावेजीकरा के बावजूद इनकी कला का सम्मान नही मिल सका। आदिवासी संस्कृति के नाम से कई कला आयोजन होते हैं। भारतीय मुल आदिम संस्कृति की और लौटने पर खूब जोर दिया जा रहा हैं। इस बिच ऐसे गुमनाम कलाकार 'दिए तले अँधेरे' की तरह हैं। जो सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाए सिर्फ खाना पूर्ति कर इनको इस्तेमाल करने में लगी हुई है। इनकी कला की स्थापना एवं सरकारी प्रदर्शनी आयोजन जैसे प्रयास से दूर हैं।

'कुछ इसी तरह के प्रश्न गोंड चित्रकला में भी दिखाई दिए। लोक आदिम से लेकर समसामयिक कला के बीच पांच दिवसीय कला का संवाद 9-13 नवम्बर 2024 पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र उदयपुर द्वारा आयोजित कला कार्यशाला में पौराणिक विषय, मधुबनी, जनगढ शैली, पिथौरा, वर्ली, भील एवं आधुनिक कला मे प्रयोगवादी सृजन किया. प्रो. मदन सिंह राठौड के संयोजन में बिहार की मधुबनी कला से पद्मश्री शांति देवी, प्रो. सुनील विश्वकर्मा, प्रो. लक्ष्मा प्रसाद, कल्याा जोशी, मयंक श्याम, कृष कुमार, महेश कुमावत, प्रेम अवाले, देसिंह सहित कुल 15 कलाकारों का चित्र सृजन देखने को मिला।

चित्र कार्यशाला में सहभागी आधुनिक दृष्टि मे देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों मे अध्यापन करने वाले कला शिक्षकों सानिध्य रहा. इसलिए सृजन के साथ देशज कला के प्रति शोध दृष्टिको के नए प्रतिमान गढ़ने का अवसर मिला। लोक आदिम विधा के सृजक के साथ संवाद कर कई प्रचलित प्रतिमान पर पुनः विचार करने की आवश्यकता महसूस हुई. प्रसिद्ध चित्रकार स्वर्गीय जनगढ सिंह श्याम के बेटे मयंक श्याम से बातचीत करने पर समझा कि गोंड कला कोई परंपरा नहीं है। इसको जनगढ शैली कहां जा सकता हैं। क्यूंकि मेरे पापा यानि जनगढ से पहले मेरे दादा परदादा कोई चित्रा नहीं करते थे। लेकिन आज शोध पुस्तकों मे इसको परम्परा के रूप में लिखा जाता रहा है। गोंड मूलतः सरकारी संस्थाओं द्वारा जन्मी कला हैं। क्यूंकि जनगढ से पूर्व गोंड कला परम्परा का अस्तित्व नहीं मिलता है। इसके बाद कई संस्थाओं ने इसी फॉर्मूले को अपनाते हुए लोक आदिम कलाकार तैयार किए जैस मेवाड़ में भी जनजाति चित्रकारों का जिक्र होता है। लेकिन इतिहास मे देखेंगे तो लघुचित्रा के अलावा जनजाति चित्रा परंपरा का कोई सन्दर्भ नहीं मिलता है। देखा जाए तो यह आजादी के बाद की संस्थानिक कला उपज है। जिसमें आदिम कथा कहानियो के विषय विधान रहे है। फुला भी कुछ इसी तरह सरकारी कला संस्थाओ की प्रयोगशाला से पनपे हैं। संस्था से उपजे फुला संस्था तक सिमित रह गए। गिने-चुने आयोजनों का इंतजार सालभर तक करते हैं''Joshi (n.d.) जनगढ़ सिंह श्याम के साथ भारत भवन के अधिकारी एवं जगदीश स्वामीनाथन जैसे सुप्रसिद्ध कलाकार लगे थे। जनगढ़ सिंह सरीखे कई कलाकारों को फर्श से अर्श तक पहुँचाया।

लेकिन फुला का कहना है कि वह एक परम्परावादी कलाकार हैं। उसके दादा एवं पिताजी से उसने चित्रकारी सीखी हैं। अब बेटी को भी सिखाया हैं। बेटे को कला में कोई रुची नहीं हैं। उन्दरी गाँव में गोमा पारगी, होमा पारगी भी आदिवासी कलाकार हैं लेकिन वो अभी सक्रिय नहीं हैं। गाँव में कई लोग चित्रकारी का काम करते थे लेकिन सभी गुमनाम हो गए। ''आदिवासी जीवन सहजीवी और सामुदायिक है। इसलिए उसका सृजन और श्रम भी सामूहिक हैं। इसमें एकल कलाकार की कोई अवधाराा नहीं हैं। आदिवासियों का सहजीवी और सहअस्तित्व वाला जीवनदर्शन 'व्यक्ति केन्द्रित' सोच और व्यवहार का जीवन के सभी स्तरों पर निषेध करता है। इसी कारा आदिवासी कला परम्परा में व्यक्तिगत कलाकार नहीं होते. गैर आदिवासियों दुनिया ने चूँकि उनकी 'खोज' की है, जहाँ कोई भी सृजन 'सामूहिक' की बजाय व्यक्तिगत ही होता हैं"Pankaj (2016) शुरुआत में परम्परा से मिटटी के घरो की दीवारों पर चुना, घेरु से चित्र बनाते थे बाद में सरकारी संस्थाओ से जुड़ने के बाद केनवास पर चित्रा करना शुरू किया। अभी कई चित्र दीवार पर एवं कागज पर बनाकर रोल करके रखे हैं। यह बताता है की कुछ शिविर में जाने से सिखा की चित्र बनाकर रखने चाहिए जिससे और आगे काम मिलेगा। फुला को संस्थाओ के अनुसार कला पर क्या-क्या बोलना है सिखा रखा हैं।

चित्र 4

चित्र 4 (फुला पारगी के पेपर पर बनाए चित्र)

फूला का ठेठ देहाती परिवेश एवं सहज गुा उनकी कला में हुबहू अभीव्यक्त होता हैं। उसके आसपास के पर्यावरा और जंगली जीव जंतुओं को सरलता पूर्वक उकेरा हैंस बातचीत मे फूला की कला क्या है? उससे उसको मतलब नहीं है। बल्कि आमदनी क्यूं नहीं हो रही हैं? यहीं दुख एवं मुल प्रश्न हैं। क्यूंकि खेतीबाड़ी से अब गुजारा नहीं चलता है। खेत के बीचोबीच रोड निकला तो मिट्टी काटकर खेतों मे डाली गई तो खेत ही बंजर हो गए। अब इतनी क्षमता नहीं रही कि पुनः जमीन खेती

लायक तैयार करूँ। इसलिए खेत में फसल नहीं होती। उम्र के इस पड़ाव पर पिछले कई दिनों से बीमार भी चल रहे थे। बातचीत करते हुए पत्नी को बोला चाय बनाओ। दोहिते को बोला दुकान से दूध लेकर आ. साधारा सरल सहज जीवन को देखकर आंखे नम हो जाती है। हम पश्चिमी कला के वान गो, गोग्व के जीवन कला को बहुरुची से पढ़ते, ऐसे संघर्षशील कलाकार तो हमारे आसपास भी रहते हैं। यकायक मना करने के बावजूद चाय चूल्हे पर चढ़ गई। फूला बातचीत करते गए अपनी कला से ज्यादा आर्थिक व्यथा सुनाते गए।

प्रतिस्पर्धा एवं दीक्षित आदिवासी कलाकारों की मौकापरस्ती

फुला बार-बार जिक्र करते हैं कि में अनपढ़ हूँ इसलिए मुझे कला क्षेत्र में उचित मौके नहीं मिल पाते आरोप लगाते कि मेरी ही बिरादरी के आदिवासी कलाकार मेरी निरक्षरता का फायदा उठाकर कई सरकारी संस्थाओ में कला आयोजनो में भाग ले रहे हैं। मेरी देखा-देखी कई कला विद्यार्थियों को अच्छा मौका मिल रहा है. वह मेरी कला की नकल करके ही आगे बड़े हैं और अब उनको ही विभिन्न कला आयोजन में बुलाते हैं। में कई आयोजनों से वंचित कर दिया जाता हूँ. मेरी थोड़ी बहुत कमाई होती थी जो इन पढ़े लिखे कलाकारो की वजह से अब कम हो गई हैं। दिल्ली में कला प्रदर्शनी में मेरी पेंटिंग दिखाकर अन्य कलाकार अपनी पेंटिंग बेचता रहा। मेरे नाम का प्रयोग होता रहा मेरे सामने. में कुछ नहीं कर पाया। इसी कला बाजार ने बहुत कम उम्र में जनगढ़ सिंह श्याम जैसे होनहार गोंड आदिवासी कलाकार को बहुत कम उम्र में हमसे छीन लिया गया।

चित्र 5

चित्र 5 (भित्ति चित्र)

चित्र 6

चित्र 6 (लोकलोर अंतरराष्ट्रीय कला कार्यशाला में कार्य करते फुला पारगी)

उपेक्षा

फुला की उपेक्षा इसलिए भी होती हैं कि अब सरकारी सस्थाओ को इनकी जरूरत नहीं क्यूंकि नए शिक्षित कलाकारों को ही आमंत्रित किया जाता हैं। जिसमे अधिकारियो को भी सुविधा रहती हैं। फुला अनपढ़ होने की वजह से संस्थाओ को संवाद एवं विशेष देखरेख सम्बन्धित जिम्मेदारी से मुक्त रहते है। लेकिन फुला की ठेठ आदिवासी कला को देश समाज के सामने लाने से हम वंचित हो रहे हैं। सरकारी कार्यप्रााली में एक बार तो कलाकार को इन्वेस्ट करना होता हैं फिर बिल एवं मानदेय समयावधि में पास होने की कठिनाई रहती हैं। आर्थिक समस्या से यह इन्वेस्ट कलाकार कर नहीं पाता तो कई मौको से वंचित हो जाता हैं।

निष्कर्ष

आदिवासी कला एवं कलाकारों के गुमनाम होने की कई वजह दिखाई पड़ती हैं। इस शोध लेख को नए प्रश्नों की दृष्टि से देखा है तो कलाकारों का आर्थिक एवं खास तौर पर सृजनात्मक मूल्यों का ह्रास क्यूँ हो रहा हैं? जबकि सरकारी संस्थाए लगातार काम कर रही हैं। ठेट आदिवासी व्यक्ति के सृजनात्मक प्रोत्साहन में संस्थान नाकाम हैं? हम यहाँ निजी कला दीर्घाओ की भूमिकाओं की बात नहीं कर रहे हैं। क्यूंकि वहां कला व्यवसाय के अलग तौर-तरीके अपनाए जाते हैं। यहाँ प्रश्न है कि जनगढ़ सिंह श्याम जैसे कलाकार की पेरिस में चित्र प्रदर्शनी लग सकती है फुला जैसे गरीब कलाकार की क्यूँ नहीं? फुला से मेरा पिछले 10 सालों में यह तीसरा साक्षात्कार है। उसके सृजनात्मक जीवन में तो परिवर्तन आया लेकिन आर्थिक जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आया। ना कोई बड़ी प्रदर्शनी या कला दीर्घाओ तक पहुँच बन पाई। जब सरकार किसानो के लिए कृषि दर्शन जैसे जागरूकता के कार्यक्रम करती हैं तो कला क्षेत्र में कला दर्शन जैसे कार्यक्रम क्यूँ नहीं होते? सृजनात्मक विकास एवं आदिवासी कला के गुमनाम होते कलाकारों को समय रहते बचाने की आवश्यकता हैं। सांस्कृतिक विभागों को गुमनाम कलाकारों के लिए विशेष आयोजन करने चाहिए जिससे आदिवासी प्रतिभा को सांस्कृतिक मंच मिल सके।

REFERENCES

Aakriti. (1990, July–September). Significance of Folk Art (लोककला की अर्थवत्ता). Aakriti, 3.

Author. (2026). Photographs used in research article taken by the author during interviews (शोध आलेख में प्रयुक्त चित्र लेखक द्वारा साक्षात्कार के समय लिए गए). Unpublished material.

Elwin, V. (2016). Art of the Tribals (आदिवासियों की कला). Adivasi Sahitya Kala Visheshank, Jawaharlal Nehru University, New Delhi, 2(7–8), 4.

Joshi, G. L. (n.d.). Aakriti (आकृति). Rajasthan Lalit Kala Akademi, Jaipur Special Issue, 2, 12.

Pankaj, A. K. (2016). Contemporary Tribal Art and Artists (समकालीन आदिवासी कला और कलाकार). Adivasi Sahitya Kala Visheshank, Jawaharlal Nehru University, New Delhi, 2(7–8), 77.

Pargi, F. (2015–2026). Interview (साक्षात्कार). Personal Interview, Chhoti Undri, Udaipur, Rajasthan.

Shyam, M. (2024, November 13). Interview excerpt (साक्षात्कार अंश). Personal Interview, Udaipur.